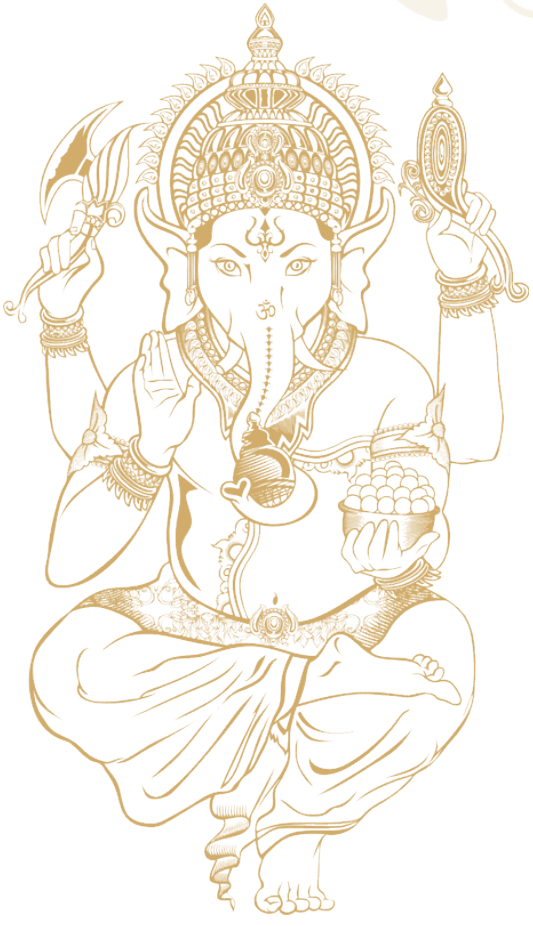

Mrs Shailja

16 Jun 1995

05:25 AM

Bilaspur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119249701**

तिथि 16/06/1995 **समय** 05:25:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Bilaspur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:47:46
अक्षांश 31:18:00 उत्तर **रेखांश** 76:48:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:22:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:37:21 घं
वेलान्तर	00:00:31 घं
सूर्योदय	05:18:16 घं
सूर्यास्त	19:28:29 घं
चैत्रादि संवत	2052
शक संवत	1917
मास	आषाढ़
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	श्रवण
योग	ऐन्द्र
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खी-खिली
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	शुक्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

चन्द्र 9वर्ष 7मा 8दि

राहु

23/01/2012
22/01/2030

राहु	05/10/2014
गुरु	28/02/2017
शनि	05/01/2020
बुध	24/07/2022
केतु	12/08/2023
शुक्र	11/08/2026
सूर्य	06/07/2027
चन्द्र	04/01/2029
मंगल	22/01/2030

योगिनी

मंगला 0वर्ष 11मा 16दि

संकटा

01/06/2023
01/06/2031

संकटा	12/03/2025
मंगला	01/06/2025
पिंगला	10/11/2025
धान्या	12/07/2026
भ्रामरी	01/06/2027
भद्रिका	11/07/2028
उल्का	10/11/2029
सिद्धा	01/06/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:12:18	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	---	0:00			
सूर्य			00:36:36	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.77	कलत्र	पितृ	सम्पत
चंद्र			10:31:33	मक	श्रवण	1	चंद्र	चंद्र	सम राशि	1.09	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			16:33:35	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि	1.19	आत्मा	भ्रातृ	मित्र
बुध	व	अ	16:04:44	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	शनि	मित्र राशि	1.18	अमात्य	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		14:54:44	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	मित्र राशि	1.09	भ्रातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र			12:40:29	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	राहु	स्वराशि	1.52	मातृ	कलत्र	जन्म
शनि			00:36:39	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.99	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		10:34:26	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		10:34:26	मेष	अश्विनी	4	केतु	शनि	मित्र राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

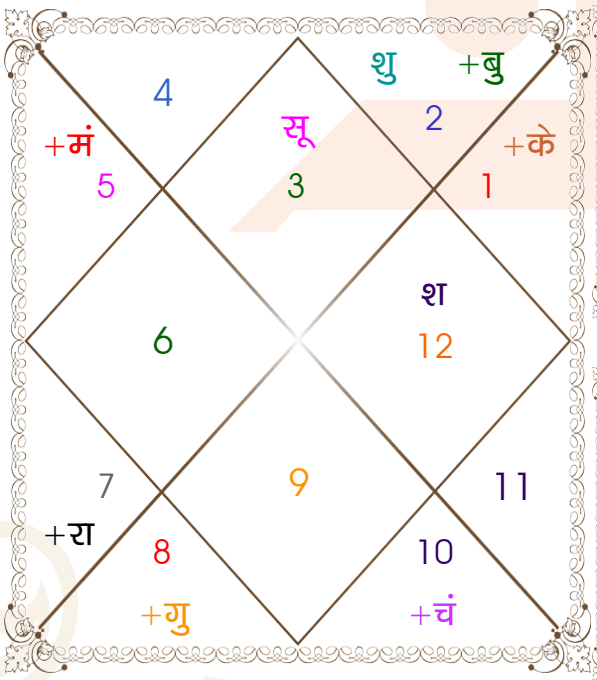

चन्द्र कुंडली

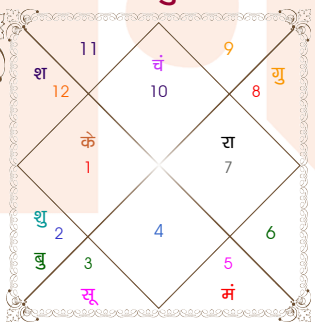

नवमांश कुंडली

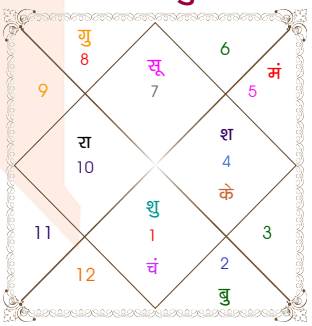

सर्वाष्टकवर्ग

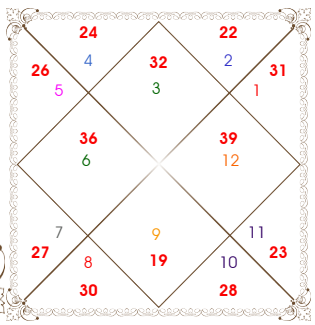

दशमांश कुंडली

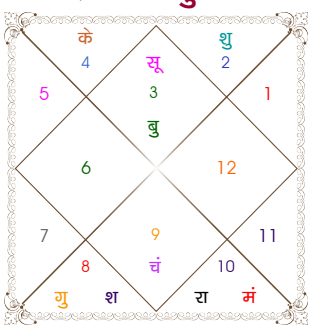

नक्षत्रफल

आप श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि वानर, वर्ण वैश्य, गण देव, वर्ग मार्जार तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "खि" या "खी" से प्रारम्भ होगा।

शास्त्रों के अध्ययन में आप हमेशा रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रमपूर्वक इनका ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा। अतः आप के मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगी। साथ ही कन्याओं की अपेक्षा आपके पुत्रों की संख्या का अनुपात अधिक रहेगा। भद्र पुरूषों एवं विद्वान लोगों के प्रति आपके मन में अगाध श्रद्धा तथा आदर का भाव रहेगा एवं उनको हादिक सम्मान प्रदान करेंगी। शत्रु का नाश करने में आप हमेशा सफल रहेंगी तथा वे भी आपसे अत्यन्त भयभीत एवं पराजित से रहेंगे। इसके अतिरिक्त धार्मिक भाषणों या प्रवचनों को सुनने में आप की तीव्र रूचि रहेगी तथा आप इसके लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अत्यन्त ही श्रद्धा तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा समय समय पर आप हृदय से इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी। आप विपुल धन की स्वामिनी होंगी तथा आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। साथ ही अपनी योग्यता तथा बुद्धि के बल पर किसी उच्चाधिकार या सम्माननीय पद को प्राप्त करने में भी समर्थ हो सकेंगी। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धालु होंगी तथा समस्त धार्मिक कार्य कलापों का आप अत्यन्त यत्नपूर्वक अनुपालन करेंगी।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक आदरणीया तथा सम्माननीया महिला होंगी तथा समाज के सभी वर्गो के लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। नाना प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान होने के कारण समाज में एक विदुषी के रूप में भी आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। आपके अर्न्तमन में दया की भावना भी रहेगी तथा दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों के प्रति इस

भावना का आप पालन करती रहेंगी। आप के पति भी एक बुद्धिमान, गुणवान तथा धनाढ्य व्यक्ति होंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन समस्त सुखसंसाधनो का उपभोग करते हुए आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप स्वभाव से ही अन्य लोगों से उपकृत होने पर उनके उपकार को स्वीकार करेंगी तथा इस कार्य के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। इस प्रकार की कृतज्ञता के भाव का प्रदर्शन करके आप अन्य जनो के मध्य उचित आदर प्राप्त करेंगी। आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय एवं आकर्षक रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित एवं आकर्षित रहेंगे। आपकी संतति संख्या अधिक होगी तथा आप सर्वगुणों से सुसम्पन्न रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपके कद की ऊँचाई अधिक होगी तथा ललाट भी विस्तृत होगा। आपकी आखें देखने में सुन्दर होंगी एवं शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में नैसर्गिक रूप से ही विशेष आकर्षण रहेगा तथा इसका आप विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहेंगी। आप शीत से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी तथा इसे सहन करने में अपने आपको असमर्थ समझेंगी। सत्य का आप सम्पूर्ण जीवन निष्ठापूर्वक पालन करने के लिए प्रयत्नशील तथा रूचिशील रहेंगी। धर्म में आपकी रूचि रहेगी परन्तु केवल अन्य

जनों के समक्ष प्रदर्शन करने के लिए आप इसका आचरण करेंगी। फिर भी समाज में सभी वर्गो के मध्य आपका मान सम्मान होगा तथा ख्याति भी दूर दूर तक फैली रहेगी। आप में क्रोध की मात्रा अल्प रहेगी एवं समयानुसार इसका प्रदर्शन करेंगी। आप सभी लोगों से समान रूप से प्रेम एवं स्नेह का भाव रखेंगी तथा घृणा या द्वेष की भावना किसी के प्रति भी अपने मन में नहीं रखेंगी। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से मिलना तथा मैत्री संबंध स्थापित करना उचित समझेंगी। लेखन कार्य के प्रति रूचि रहने के कारण काव्य शास्त्र में आप सफलता प्राप्त करेंगी। पूर्ण उत्साह का आप में अभाव रहेगा तथा लालची प्रकृति होने से यदा कदा कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पति एवं पुत्र सहित परिवार के पालन में हमेशा व्यस्त रहेंगी। साथ ही आपकी कमर भी पतली होगी। आप शीघ्र ही दूसरे लोगों की बातों से सहमत हो जाएंगी तथा उनके कहे अनुसार ही आचरण भी करेंगी। इसके साथ ही आपका स्वभाव आलसी भी होगा अतः कार्यों में कभी कभी अनावश्यक विलम्ब होगा परन्तु भाग्य की प्रबलता आपके साथ रहेगी तथा कई महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल द्वारा सफल हो जाएंगे। आपकी भ्रमण तथा यात्रा में विशेष रूचि रहेगी। अतः आपका अधिकांश समय यात्रा तथा भ्रमण आदि में ही व्यतीत होगा। आप में मध्यम रूप से शारीरिक बल विद्यमान रहेगा तथा प्रकृति साहस एवं निर्भयता से युक्त रहेगी इसलिए कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने की आपकी इच्छा निरन्तर बनी रहेगी। आपके मन में कठोरता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं समयानुसार इस प्रवृति का प्रदर्शन भी करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त वायु से उत्पन्न रोगों से कई बार आप पीड़ित रहेगी एवं इनसे व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। साथ ही समस्त सत्वगुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवार में आपको सामान्य रूप से ही मान सम्मान की प्राप्ति होगी। लेकिन कुल की रीति को आगे बढाने में आप निरन्तर यत्नशील रहेंगी तथा समस्त मर्यादाओं का भी पालन करेंगी। पति के ऊपर पूर्ण नियंत्रण रखने में आप सफलता अर्जित करेंगी तथा वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञानार्जन में रूचि होने के कारण आप परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी तथा

समाज में एक विदुषी के रूप में अपना प्रभाव स्थापित करेंगी। सज्जन एवं सुन्दर पुरूषों द्वारा आपको हमेशा आदर तथा प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। माता से आपका विशेष मोह तथा सम्मान का भाव रहेगा। आप पुत्रादि संततियों से युक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी। बन्धुवर्ग से आपका विशेष आदर होगा तथा आप भी उनकी पूर्ण सहायता करती रहेंगी। धन सम्पति की आप हमेशा स्वामिनी रहेंगी। साथ ही त्याग की भावना भी आप में रहेगी एवं अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी। आपका परिवार भी विस्तृत होगा तथा नित्य सुख की चिन्ता में आप लीन रहेंगी एवं सुख प्राप्ति के लिए भी हमेशा प्रयत्नशील तथा तत्पर रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आपको किसी तीसरे व्यक्ति की सम्पति प्राप्त होगी तथा आप सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगी। आप हमेशा लोगों के कल्याण के लिए भी चिन्तित रहेंगी एवं समय समय पर उनके लिए कल्याणकारी कार्यों को करती रहेंगी एवं नित्य उन्हें अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। सलाह देने के कार्यों में भी आप अत्यन्त ही दक्षता का परिचय देंगी। बन्धुवर्ग के पालन में भी आपकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में उनका पूरा साथ देंगी। इसके साथ ही समस्त शौर्य गुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा साहस पूर्वक जीवन यापन करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीत शास्त्र में अत्यानुराग होने के कारण आप इस क्षेत्र में विशेष सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगी। आप सुकान्ति एवं लावण्यमय शरीर से युक्त रहेंगी तथा इसके द्वारा आपकी सुन्दरता में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथा मधुरता से युक्त रहेगी। आपकी बुद्धि सरल रहेगी। आप सुगमतापूर्वक अपने भावों को व्यक्त करेंगी तथा उसी प्रकार अन्य जनों के भावों को ग्रहण करने में समर्थ रहेंगी। आपको थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको विस्तृत ज्ञान

रहेगा एवं अच्छे बुरे की पहचान करने में भी समर्थ रहेंगी। आप स्वयं विद्वानों द्वारा वर्णित उत्तम गुणों से सुशोभित होंगी एवं जीवन में सर्वप्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

आपका स्वरूप देखने में सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा। आपकी प्रवृति स्वाभाविक रूप से दानशीलता की रहेगी। अतः जरूरतमन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप यथा शक्ति दान देती रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला भी होंगी एवं हमेशा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी। अनावश्यक भौतिकता की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा करेंगी। इसके अतिरिक्त एक महान विदुषी के रूप में भी आप दूर दूर तक प्रसिद्ध रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में नैसर्गिक रूप से चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा। अतः आपके अधिकांश कार्य चपलता से ही सम्पन्न होंगे। आपकी मिष्ठान भक्षण में विशेष रूचि रहेगी तथा इस के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेगी एवं इसकी प्राप्ति के समय भी आप अत्यन्त ही आतुरता का प्रदर्शन करेंगी। आप की प्रवृति अन्य जनों से विवाद आदि की भी रहेगी। अतः परस्पर आपका विवाद या कलह प्रायः होता रहेगा। आपकी संततियां सभी गुणवान एवं बुद्धिमान रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही आप एक साहसी एवं शौर्य गुणों से युक्त महिला भी होंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर, शकुनि करण तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी

नियमित रूप से रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तेल, तिल, कम्बल एवं चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।